J.M.S. college
01.09.20

B.A. Part-II Philosophy (Hons) Paper-III

Q. Does the end justify the means?
(क्या साध्य साधन को औचित्य प्रदान करता है?)

Ans – नीतिशास्त्र में 'साध्य' एवं 'साधन' का महत्वपूर्ण स्थान है। इसलिए नैतिक निर्णय लेने में साधन के औचित्य एवं अनौचित्य पर विचार करना आवश्यक है। प्रश्न यह है कि साध्य, साधन को औचित्य प्रदान करता है या नहीं? अर्थात् साध्य की प्राप्ति के लिए साधन किस प्रकार का होना चाहिए? यह प्रश्न बहुत विवादास्पद है। कुछ विचारकों के अनुसार साध्य साधन को औचित्य प्रदान करता है। किसी भी साधन से साध्य प्राप्त किया जा सकता है। साधन की पवित्रता और अपवित्रता पर विचार नहीं करना चाहिए। अच्छे लक्ष्य की सिद्धि के लिए अनुचित साधन का प्रयोग किया जाए तो भी कर्म उचित कहा जायेगा। Marx एवं उनके अनुयायी इस प्रकार के विचार रखते हैं। साम्यवादी सुख सम्पन्न समाज की स्थापना के लिए सशस्त्र विद्रोह को साधन के रूप में अपनाते हैं। धनियों के धन लूटने से अगर गरीब मजदूरों की भलाई होती है तो यह कार्य नैतिक दृष्टि से उचित है। चार्वाक भी साधन की पवित्रता और अपवित्रता पर ध्यान नहीं देता है। चार्वाक के अनुसार सुखमय जीवन व्यतीत करने के लिए अगर ऋण भी लेना पड़े तो यह कार्य उचित है। चाणक्य के बारे में कहा जाता है कि वह साध्य को देखता था, साधन को नहीं। हिन्दू पौराणिक ग्रंथ में देखते हैं कि भगवान वामन रूप से बलि को छला। भगवान ने लोककल्याण के लिए युद्ध और नरसिंह के अवतार लिए। नीत्से, हॉब्स आदि विचारक साध्य को ही प्रमुख मानते हैं। इस सिद्धान्त के अनुसार युद्ध समाप्त करने के लिए युद्ध करना उचित है।

महात्मा गाँधी, विनोबा जी एवं कुछ पाश्चात्य विचारकों के अनुसार साध्य, साधन को औचित्य प्रदान नहीं करता। साध्य के साथ-साथ साधन भी पवित्र होना चाहिए। साध्य शुभ हो, परन्तु साधन अशुभ और अपवित्र हो तो वह कर्म अनैतिक है। साध्य और साधन में घनिष्ठ संबंध है। साधन को साध्य से अलग नहीं कर सकते हैं। गाँधी जी का सत्याग्रह अहिंसा पर आधारित है। यह साधन की पवित्रता का द्योतक है। स्वतंत्रता संग्राम में गाँधी जी ने अहिंसात्मक साधन को अपनाया। विनोबा जी भी सत्य और अहिंसा के द्वारा सामाजिक क्रान्ति लाने का प्रयास कर रहे थे। सर्वोदय साधन की पवित्रता पर बहुत जोर देता है।

Scanned with CamScanner

उपरोक्त दोनो विचारधाराओं को देखने के बाद अब यह प्रश्न उठता है कि क्या प्रथम विचारधारा ठीक है? सामान्यतः साध्य साधन को औचित्य प्रदान नहीं करता है। नैतिक दृष्टिकोण से साध्य के साथ साधन भी पवित्र होना चाहिए। अपवित्र साधन को अपनाने से चरित्र पर इसका बुरा प्रभाव पड़ता है। आत्मबल कम हो जाता है। जो बुरे साधन को अपनाता है, वह अंततः सुख एवं शांति को प्राप्त नहीं कर सकता है। जिस समाज में ऐसे साधन अपनाये जाते हैं, वह समाज भी दूषित हो जाता है। यदि इसी तरह सभी बुरे साधन को अपनाना शुरू करे तो समाज और देश में अशांति फैल जायेगी। इससे व्यक्ति का नैतिकबल एवं आत्मबल दोनों समाप्त हो जाता है। इस मत को मानने का अर्थ है अनीति का समर्थन करना। यदि यह नियम ठीक है तो सत्कर्म और दुष्कर्म में कोई भेद ही नहीं रह जायेगा। एक हत्यारा भी इस सिद्धान्त को अपनाकर फाँसी से मुक्ति की मांग कर सकता है। वह कह सकता है कि उसका साध्य शुभ था। अनुचित साधन अपनाने से साध्य की प्राप्ति जल्दी अवश्य हो जाती है, परन्तु वह स्थायी और टिकाऊ नहीं होता है।

Paulsan का कहना है कि साध्य के द्वारा साधन को उचित ठहराना ठीक ही नहीं बल्कि आवश्यक है। उनके अनुसार साध्य और साधन का गलत अर्थ लेने से ही अनर्थ होता है। Paulsan के अनुसार 'साध्य साधन को औचित्य प्रदान करता है।' साध्य का सही अर्थ यहाँ पर साधारण साध्य नहीं बल्कि परम साध्य है। मनुष्य का परम साध्य आत्मपूर्णता है। आत्मपूर्णता की प्राप्ति के लिए जो साधन अपनाया जायेगा वह पवित्र और शुभ होगा। इस अर्थ में साध्य साधन को औचित्य अवश्य प्रदान करता है। सामान्य सिद्धान्त तो यह है कि साध्य, साधन को औचित्य प्रदान करता है। इस नियम के कुछ अपवाद भी हैं। जैसे - एक डॉक्टर रोगी को स्वस्थ करने के लिए रोगी को कष्ट देता है। पिता अपने पुत्र को सुधारने के लिए पीटता है, विदेशी आक्रमणकारियों को भगाने के लिए सेना के द्वारा विदेशियों की हत्या करना, अपने जान-माल की रक्षा के लिए हिंसात्मक साधन को अपनाना इत्यादि अनुचित नहीं है। गाँधी जी ने एकबार अपने आश्रम में एक बछड़े को दुःख से कराहते हुए सुना, जिसके बचने की आशा कोई आशा नहीं थी। ऐसी स्थिति में उन्होंने बछड़े को जहर देने की अनुमति दी। इन उदाहरणों में साध्य उत्तम है, किन्तु इनकी प्राप्ति

(3)

के लिए बुरे साधन अपनाए गए हैं। जहाँ साध्य की पवित्रता के चलते साधन भी पवित्र हो गए हैं और कर्म नैतिक बन गए हैं। उपर्युक्त उदाहरणों के विश्लेषण से निम्नलिखित बातें स्पष्ट होती हैं —

(i) साध्य से होनेवाला लाभ साधन से होनेवाले कष्ट से कई गुणा अधिक और अच्छा हो तो साध्य, साधन को औचित्य प्रदान करता है। डॉक्टर के द्वारा रोगी के चीड़फाड़ करनेवाले उदाहरण तथा पिता का पुत्र को पीटनेवाले उदाहरण में देखते हैं कि साधन से जो कष्ट होता है, वह क्षणिक है। भविष्य में साध्य से बहुत लाभ होने की आशा है। पिता, पुत्र के हित के लिए ही दण्ड देता है।

(ii) अगर एक साध्य का एक ही साधन हो तो साध्य साधन को औचित्य प्रदान करता है। कर्ता के पास कोई अन्य उपाय नहीं बच जाय, तो ऐसी स्थिति में साध्य साधन को औचित्य प्रदान करता है। जैसे रात में किसी व्यक्ति के घर पर कुछ डकैत हमला कर देता है। उस व्यक्ति के पास गोली चलाने के अलावा कोई दूसरा उपाय नहीं बच पाता है। अत: उस व्यक्ति का गोली चलाना अनुचित नहीं कहा जा सकता।

(iii) उपर्युक्त प्रमाणों के आधार पर कहा जा सकता है कि ऐसे कार्यों में साध्य, साधन को औचित्य प्रदान करता है, फिर भी यह अपवाद है, नियम नहीं कहा जा सकता है। सामान्य नियम तो यही है कि साध्य साधन को औचित्य प्रदान नहीं करता है। बुरे साधन से साध्य की प्राप्ति नैतिक दृष्टिकोण से उचित नहीं है।

अत: निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि साध्य साधन को औचित्य प्रदान नहीं करता है। नैतिक दृष्टिकोण से अनुचित साधनों का प्रयोग वर्जित है। यह व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के लिए हानिकारक है। यहाँ बर्क (Burke) महोदय का विचार उल्लेखनीय है — "Criminal means once tolerated are soon preferred, as presenting a shorter cut to the object than through the highway of moral virtues." उनके कहने का अभिप्राय यह है कि अनैतिकता का मार्ग सरल है और नैतिकता का मार्ग दुर्गम। किन्तु, अनैतिकता के मार्ग पर एकबार चलने से उसपर चलने का अभ्यास हो जाता है और यह समाज के लिए खतरा बन जाता है। अत:, साध्य के साथ-साथ साधन की पवित्रता पर भी ध्यान देना आवश्यक है, तभी कोई कर्म पूर्ण रूप से उचित कहा जा सकता है।

[illegible]

01.9.20